

aglasem.com

कक्षा ११ राजनीति विज्ञान नोट्स

स्वतंत्रता

Key Notes and Important Questions with Answers

अध्याय 11

स्वतंत्रता

स्वतंत्रता क्या है?

- सामान्यतः स्वतंत्रता को प्रतिबंधों तथा सीमाओं के अभाव के रुप में माना जाता है। इसे मानव के 'जो चाहे सो करे' के अधिकार का पर्यायवाची समझा जाता है।
- हाब्स ने इसे अर्थात ' जो चाहों सो करो' की स्थिति को स्वच्छंदता की स्थिति कहा है जो प्राकृतिक अवस्था में उपलब्ध होती है।
- दूसरे शब्दों में, स्वतंत्रता का अर्थ है मानव को उस कार्य को करने का अधिकार जो वह करने के योग्य है। व्यक्ति की आत्म अभिव्यक्ति की योग्यता का विस्तार करना तथा ऐसी परिस्थितियों का होना जिसमें लोग अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें।
- वार्कर के अनुसार, 'व्यक्तियों की स्वतंत्रता अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रताओं के साथ जुड़ी हुई है।
- स्वतंत्रता व्यक्तित्व विकास की सुविधा + तर्कसंगम बंधन।
- बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी, नेल्सन मण्डेला तथा आंग सान सू, की आदि व्यक्तियों ने शासन में भेदभाव, शोषणात्मक व दमनात्मकारी नीतियों का विरोध कर स्वतंत्रता को अपने जीवन का आदर्श बनाया।

स्वतंत्रता के आयामः–

- स्वतंत्रता के दो आयाम है– (i) नकारात्मक व (ii) सकारात्मक
- नकारात्मक स्वतंत्रता– नकरात्मक भाव में इसका यह निहितार्थ है कि जहां तक संभव हो प्रतिबंधों का अभाव हो। क्योंकि प्रतिबंध व्यक्तिगत स्वतंत्रता में कटौती करते है। इसलिए इच्छानुसार कार्य करने की छूट हो और व्यक्ति के कार्यों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध न हो।
- समर्थक है जॉन स्टुअर्ट मिल और एफ.ए. हायक आदि।
- **सकारात्मक स्वतंत्रता**
  - नियमों व कानूनों के अंतर्गत ऐसी व्यवस्था जिससे मनुष्य अपना विकास कर सकें।
  - यदि राज्य सार्वजनिक कल्याण का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है तो प्रतिबन्ध अनिवार्य है।

– मानव समाज मे रहता है, उसके कार्य अन्य लोगों की स्वतंत्रता को प्रभावित करते है। इसलिए इसका जीवन बंधनों द्वारा विनियमित होना चाहिए।
– तर्कयुक्त बंधनों की उपस्थिति।
– समर्थक है टी.एच.ग्रीन व प्रो. ईसायाह बर्लिन'

प्रतिबंधों के स्रोतः–



प्रतिबंधों की आावश्यकताः–

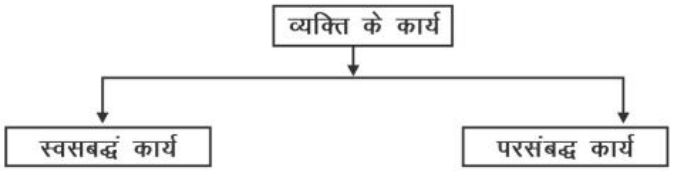




उदारवादी बनाम मॉर्क्सवादी धारणाः–

- ऐतिहासिक रूप से उदारवाद ने मुक्त बाजार और राज्य की न्यूनतम का पक्ष लिया है। हालांकि अब वे कल्याणकारी राज्य की भूमिका को स्वीकार करते है और मानते है कि सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कम करने वाले उपायों की जरूरत है।
- सकारात्मक उदारवादी (हॉब्स लॉक तथा लास्की) समर्थन करते है कि कानून व्यक्तियों की स्वतंत्रता की रक्षा करता हैं। सार्वजनिक हित में व्यक्तियों को सर्वोत्तम विकास के अवसर उपलब्ध कराने के लिए उचित प्रतिबंधों का समर्थन।
- उदारवादी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समानता जैसे मूल्यों से अधिक वरीयता देते है। वे आमतोर पर राजनीतिक सत्ता का भी संदेह की नजर से देखते है।
- मार्क्सवादी (समाजवादी) सामाजिक जीवन के ढांचे में उपलब्ध आर्थिक स्वतंत्रता को महत्व देते है।
- स्वतंत्रता की मार्क्सवादी धारणा सभी लोगों के लिए इसके समान हितों की कामना करती है। वर्गों के बोझ से दबे बुर्जुआ समाज में उसके निहितार्थ भिन्न वर्गों के लिए भिन्न होते है। इसलिए जब तक पूंजीवादी व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था नहीं आ जाती तब तक वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है।

स्वतंत्रता सम्बन्धी जे.एस.मिल के विचारः–



वे कार्य जिनके प्रभाव केवल इन कार्यो को करने वाले व्यक्ति पर पडते है।

– वे कार्य जो कर्त्ता के अलावा बाकी लोगों पर भी प्रभाव डालते है।

इन कार्यों व निर्णयों के मामले में राज्य या किसी बाहरी सत्ता का कोई हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है

– ऐसे कार्य जो दूसरे को नुकसान पहुंचा सकते है उन पर राज्य बाहरी प्रतिबंध लगा सकता है।

– हानि का सिद्धांतः परसंबद्ध कार्यों से किसी दूसरे को हानि हो सकती है इस कारण से उस पर औचित्यपूर्ण प्रतिबंध लगाया जा सकता है। राज्य का किसी व्यक्ति के कार्यों व इच्छा के खिलाफ प्रतिबंध लगाने का उद्देश्य किसी अन्य को हानि से बचाना होता हैं

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रताः–

– अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मुद्दा अहस्तक्षेप के लघुत्तम क्षेत्र से जुड़ा है।

– जान स्टुअर्ट मिल ने अपनी पुस्तक 'आन लिबर्टी' में सबल तर्क रखते हुए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उन्हें भी होनी चाहिए जिनके विचार आज की स्थितियों में गलत और भ्रामक लग रहे हो।

– चार सबल तर्कः–

1) कोई भी विचार पूरी से गलत नहीं होता। उसमें सच्चाई का भी कुछ अंश होता है।

2) सत्य स्वंय से उत्पन्न नहीं होता बल्कि विरोधी विचारों के टकराव से पैदा होता है।

3) जब किसी विचार के समक्ष एक विरोधी विचार आता है तभी उस विचार की विश्वसनीयता सिद्ध होती है।

4) आज जो सत्य है, वह हमेशा सत्य नही रह सकता। कई बार जो विचार आज स्वीकार्य नही है वह आने वाले समय के लिए मूल्यवान हो सकते है।

– अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कई बार प्रतिबंध अल्पकालीन रूप में समस्या का समाधान बन जाते है तथा तत्कालीन मांग को पूरा कर देते है लेकिन समाज में स्वतंत्रता के दूरगामी संभावनाओं की दृष्टि से यह बहुत खतरनाक है।

स्वतंत्रता की रक्षा के उपायः–

- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था
- मौलिक अधिकरों का प्रावधान
- कानून का शासन
- न्यायपालिका की स्वतंत्रता
- शक्तियों का विकेन्द्रीकरण
- शक्तिशाली विरोधी दल
- आर्थिक समानता
- विशेषाधिकार न होना
- जागरूक जनमत

प्रश्नावली

एक अंकीय प्रश्नः–

1. स्वतंत्रता के लिए प्रतिबंधों की आवश्यकता क्यों है?
2. प्रतिबंधों के स्रोत क्या है?
3. नकारात्मक स्वतंत्रता से आप क्या समझते है?
4. एक व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता क्यों आवश्यक है?
5. जान स्टुअर्ट मिल ने व्यक्ति के कार्यों को कितने भागों में विभाजित किया है?
6. नेल्सन मंडेला की आत्मकथा का शीर्षक क्या है।
7. आगं सान सू किस देश में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही है?
8. उदारवादियों के अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ लिखिए।
9. भारतीय राजनीतिक विचारों में स्वतंत्रता की समानार्थी अवधारण क्या है?
10. ''तुम जो कहते हो मैं उसका समर्थन नहीं करता परन्तु मैं मरते दम तक तुम्हारे कहने के अधिकार का बचाव करूंगा।'' यह कथन किसका है और इसमें किस प्रकार की स्वतंत्रता की बात कहीं गई है?
11. स्वतंत्रता संबंधी नेताजी सुभाष चन्द्र जी के विचार क्या है?
12. 'स्वराज' शब्द से क्या अभिप्राय है?
13. स्वतंत्रता की एक विशेषता का वर्णन कीजिए?
14. लोकमान्य तिलक ने स्वराज्य के बारे में क्या कहा था?
15. सलमान रुश्दी की कौन–सी पुस्तक पर प्रतिबंध लगाया गया था?

दो अंकीय प्रश्नः–

1. व्यक्तिगत स्वतंत्रता से आप क्या समझते है?
2. राजनीतिक स्वतंत्रता पर अपने विचार प्रकट कीजिए?
3. राष्ट्रीय स्वतंत्रता पर अपने विचार दीजिए?
4. नागरिक स्वतंत्रता का अर्थ बताइए?
5. आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ स्पष्ट कीजिए?
6. स्वतंत्रता से आपका क्या अभिप्राय है?
7. फिल्म निर्माता दीपा मेहता को काशी में विधवाओं पर फिल्म बनानें से किस आधार पर रोका गया? यह किस स्वतंत्रता का उल्लंघन था?

चार अंकीय प्रश्नः–

1. नकारात्मक और सकारात्मक स्वतंत्रता में क्या अंतर है?
2. सामाजिक प्रतिबंधों से क्या अभिप्राय है? क्या किसी भी प्रकार के प्रतिबंध स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है?
3. स्वतंत्रता के चार लक्षणों का वर्णन करो?
4. जॉन स्टुअर्ड मिल के 'हानि सिद्धान्त' का वर्णन करो?

पांच अंकीय प्रश्नः–

1. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

   सकारात्मक स्वतंत्रत के पक्षधरों का मानना है कि व्यक्ति केवल समाज में ही स्वतंत्रत हो सकता है, समाज से बाहर नहीं और इसलिए वह समाज को ऐसा बनाने का प्रयास करते है जो व्यक्ति के विकास का रास्ता साफ करें। दूसरी ओर नकारात्मक स्वतंत्रता का सरोकार अहस्तक्षेप के अनुलंधनीय क्षेत्र से है, इस क्षेत्र से बाहर समाज की स्थितियों से नही। नकारात्मक स्वतंत्रता अहस्तक्षेप के इस छोटे क्षेत्र का अधिक से अधिक विस्तार करना चाहेगी। हालांकि ऐसा करने में वह समाज के स्थयित्व को ध्यान रखेगी। आमतौर पर दोनों तरह की स्वतंत्रताएं साथ–साथ चलती है और एक–दूसरे का समर्थन करती है लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि निरंकुश शासन सकारात्मक स्वतंत्रता के तर्कों का सहारा लेकर अपने शासन को न्यायोचित सिद्ध करने की कोशिश करे।

   (क) सकारात्मक स्वतंत्रता से क्या अभिप्राय है?

   (ख) नकरात्मक स्वतंत्रता की अवधारणा क्या है?

   (ग) गद्यांश के अनुसार, सकारात्मक स्वतंत्रता के विपक्ष में क्या तर्क दिया गया है?

छः अंकीय प्रश्नः–

1. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का क्या अर्थ है? आपकी राय में इस स्वतंत्रता पर समुचित प्रतिबंध क्या होंगे? उदाहरण सहित बताइये।
2. हमें प्रतिबंधों की आदत को विकसित क्यों नहीं होने देना चाहिए? ऐसा आदत किस प्रकार से स्वतंत्रता को खतरे में डाल सकती है? व्याख्या कीजिए।

उत्तरमाला

एक अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. अगर स्वतंत्रता पर प्रतिबंध न होंगे तो समाज अव्यवस्था की गर्त में पहुंच जाएगा। लोगों के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
2. कानून द्वारा, बल के आधार पर,
3. एक ऐसा क्षेत्र जिसमें व्यक्ति अबाधित रूप से व्यवहार कर सके।
4. आत्म अभिव्यक्ति की योग्यता का विस्तार करना तथा प्रतिभा का विकास करना।
5. दो भागों में – स्वसंबद्ध कार्य, परसबंद्ध कार्य
6. 'लॉग वाक टू फ्रीडम' (स्वतंत्रता के लिए लंबी यात्रा)
7. म्यांमार में
8. उदारवादियों के अनुसार स्वतंत्रता का केन्द्र बिन्दू व्यक्ति है। व्यक्ति को अधिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्वतंत्रता पर बल तथा राज्य की कल्याणकारी भूमिका को बढ़ावा देना।
9. स्वराज की अवधारणा।
10. यह कथन 'वाल्तेयर' का है और इसमें 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता'की बात कही गयी है।
11. ऐसी सर्वांगीण स्वतंत्रता से है– जो व्यक्ति और समाज की हो, अमीर और गरीब की हो, स्त्रियो और पुरूषों की हो तथा सभी लोगों और सभी वर्गों की हो।
12. स्वराज का अर्थ 'स्व' का शसन भी हो सकता है और 'स्व' के उपर शासन भी हो सकता है। स्वराज केवल स्वतंत्रता नहीं है बल्कि ऐसी संस्थाओं से मुक्ति भी है, जो मनुष्य को उसकी मनुष्यता से वंचित करती है।
13. उचित बंधनों का होना।
14. ''स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा''।
15. 'द सेटानिक वर्सेस'

दो अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. मनुष्यों का व्यक्तिगत मामलों में पूरी तरह से स्वतंत्रता होनी चाहिए। भोजन, वस्त्र, शादी–विवाह, रहन–सहन आदि मामलों में राज्य को दखल नहीं देना चाहिए।

2. राज्य के नागरिकों को–
   - अपनी सरकार में भाग लेना।
   - मताधिकार का प्रयोग करना।
   - चुनाव लड़ना आदि।

3. राष्ट्र को विदेशी नियंत्रण से स्वतंत्रता प्राप्त होती है। एक स्वतंत्र राष्ट्र ही अपने नागरिकों को अधिकार तथा स्वतंत्रता प्रदान कर सकता है। जिससे नागरिकों अपना सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथ राजनैतिक विकास कर सके।

4. एक व्यक्ति को किसी राज्य का नागरिक होने के कारण मिलती है। ऐसी स्वतंत्रता को राज्य के माध्यम से दिया जाता है। राज्य के संरक्षण में ही व्यक्ति इस स्वतंत्रता का प्रयोग अपने विकास के लिए करता है, बिना किसी की स्वतंत्रता को बाधित किए हुए।

5. – अपनी रूचि व योग्यातानुसार व्यवसाय करने की स्वतंत्रता।
   – देश में उद्योग–धंधों को चलाने की स्वतंत्रता।
   – धन का उत्पादन व वितरण ठीक ढंग से हो।
   – बेरोजगारी न हो।

6. स्वतंत्रता अभिप्राय व्यक्ति पर बाहरी प्रतिबंधों का अभाव है। इसका आशय व्यक्ति की आत्म अभिव्यक्ति की योग्यता का विस्तार करना और उसके अंदर की संभावनाओं को विकसित करना भी है, जिसमें व्यक्ति की रचनात्मकता और क्षमताओं का विकास हो सकें।

7. – भारत की दशा का बुरा चित्रण होना।
   – विदेशी पर्यटकों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए।
   – काशी नगरी की बदनामी होनी।

   यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन था।

चार अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. नकारात्मक स्वतंत्रता का अर्थ उस स्वतंत्रता से है जिनके अंतर्गत व्यक्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं है। व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कार्य करता है। हॉब्स के अनुसार ''ऐसी स्वतंत्रता का अर्थ है– सभी प्रकार के प्रतिबंधों का अभाव।'' जबकि सकारात्मक स्वतंत्रता नियमों, उपनियमों तथा कानूनों के अंतर्गत प्राप्त स्वतंत्रता। संक्षेप में कहा जाए तो नकरात्मक स्वतंत्रता के समर्थक राज्य के कम से कम हस्तक्षेप के पक्ष में थे ताकि मनुष्य पर किसी प्रकार का

नियंत्रण न हो जबकि सकरात्मक स्वतंत्रता के पोशक राज्य को अधिक से अधिक कार्य देने के पक्ष में हैं। उनके अनुसार इससे व्यक्तियों पर नियंत्रण नहीं होता बल्कि राज्य व्यक्तियों के विकास के लिए उचित परिस्थितियों को प्रदान करता है।

नकारात्मक स्वतंत्रता पूर्ण स्वतंत्रता है जबकि सकारात्मक स्वतंत्रता नियंत्रित स्वतंत्रता है।

नकारात्मक स्वतंत्रता में सभी प्रकार के बंधनों का अभाव होता है जबकि सकारात्मक स्वतंत्रता में अनुचित बंधनों का अभाव तथा उचित बंधनों का अस्तित्व है।

नकारात्मक स्वतंत्रता 18वीं तथा 19वीं शताब्दियों की स्वतंत्रता है जबकि सकारात्मक स्वतंत्रता वर्तमान शताब्दी की स्वतंत्रता है।

नकारात्मक स्वंतत्रता में एक व्यक्ति कुछ कह सकता है, परन्तु सकारात्मक स्वतंत्रता में व्यक्ति सीमा में रहकर ही कुर कर सकता है।

2. सामाजिक प्रतिबंध – सामाजिक प्रतिबंध का आषय है कि समूह, समुदाय या राज्य के द्वारा व्यक्ति को चयन, निर्णय या काम करने की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाना है। ऐसे प्रतिबंध जो जरूरी हों, जिनसे व्यक्ति की स्वतंत्रता सुरक्षित हो। बिना प्रतिबंधों के स्थिति अराजकता की हो जाएगी, अव्यवस्था की स्थिति हो जाएगी।

सभी प्रकार के प्रतिबंध स्वतंत्रता के लिए आवश्यक नहीं है। जो प्रतिबंध जोर–जबरदस्ती यानी बलपूर्वक लगाए जाते हैं, जिसमें शासक वर्ग के हितों की पूर्ति हो, वे प्रतिबंध स्वतंत्रता के लिए आवष्यक नहीं, हैं जैसे– तानाशाही शासन व्यवस्था में। जबकि लोकतंत्रिक देशों में सरकार द्वारा लोगों की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्रतिबंध लगाना लोगों को उचित परिस्थितियाँ देना है। अतः वह सामाजिक प्रतिबंध जो व्यक्ति को चयन, निर्णय या काम करने की स्वतंत्रता देता है, स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है। वे प्रतिबंध स्वतंत्रता के लिए आवश्यक हैं जो व्यक्तिगत समूहों तथा राष्ट्र के बीच के संबंधों पर लागू होते हैं।

3. स्वतंत्रता के लक्षण निम्नलिखित हैं–

(i) स्वतंत्रता सभी व्यक्तियों को समान रूप से मिलती है।

(ii) करने योग्य कार्य को करने की शक्ति ही स्वतंत्रता है।

(iii) स्वतंत्रता नियंत्रण से मुक्ति ही नहीं दिलाती बल्कि व्यक्तिगत के विकास के अवसर प्रदान करती है।

(iv) स्वतंत्रता समाज में मिल सकती है, समाज के बाहर नहीं।

(v) स्वतंत्रता का प्रयोग समाज के विरुद्ध नहीं किया जा सकता है।

4. सिद्धान्त यह है कि किसी के कार्य करने की स्वंत्रता में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से हस्तक्षेप करने का इकलौता लक्ष्य आत्मरक्षा है। सभ्य समाज के किसी सदस्य की इच्छा के खिलाफ शक्ति के औचित्यपूर्ण प्रयोग का एकमात्र उद्देष्य किसी अन्य को हानि से बचाना हो सकता है। अतः हानि पहुँचाने वाले कार्यो पर प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। इसे ही हानि का सिद्धान्त कहते हैं।

पांच अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

– छात्र एवं छात्राएँ शिक्षक की सहायता से स्वयं करेगें।

छः अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता – अपने विचारों को प्रकट करने की आजादी ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। व्यक्ति अपने विचारों को कहकर, लिखकर या किसी माध्यम से प्रकट कर सकते हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छे 19 द्वारा नागरिकों को भाषण व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। इस स्वतंत्रता पर समुचित प्रतिबंध हैं। कोई भी स्वतंत्रता बंधनों के अभाव में नहीं रह सकती। प्रतिबंधों के कारण ही लोगों की स्वतंत्रता कायम रह सकती है। यदि कोई व्यक्ति अपने विचारों को व्यक्त करता है परन्तु वह किसी व्यक्ति का अपमान नहीं कर सकता या किसी को अपशब्द नहीं कह सकता। व्यक्ति अपनी इच्छानुसार स्वतंत्रतापूर्वक कार्य तो कर सकता है परन्तु वह अपनी मनमानी नहीं कर सकता। परन्तु राज्य को यह शक्ति दी गई है कि वह देश की अखण्डता, सुरक्षा, शांति, नैतिकता आदि को ध्यान में रखते हुए इन अधिकारों पर प्रतिबंध लगा सकता है।''

   राज्य यह भी ध्यान रखता है कि प्रतिबंध इतने भी न हो कि स्वतंत्रता ही नष्ट हो जाए। लोकतांत्रिक राज्यों में सरकार लोगों का स्वंतत्रता की रक्षक हैं।

2. विद्यार्थी स्वयं अपने विवेक से उत्तर देंगे।